कामेश अपने मित्र रमापति से कहता है कि जीवन की वार्धक्य वेला में व्यक्ति तरह-तरह के कष्टों एवं उत्तरदायित्वों के बोझ से इस कदर शिथिल हो जाता है कि उसमें खुशी लूटने ही शक्ति ही नहीं रह जाती । यह तो गनीमत कहिए कि वह अपनी पत्नी, संतानों और मित्रों के साथ होता है नहीं तो उसके जीवन में केवल निराशा-ही-निराशा रहती । बार्धक्य ही स्थितियि में पत्नी, हँसती-खेलती संतान और मित्र ही जीने की अभिलाषा जीवित रखते हैं । कामेश का यह कथन रमापति के प्रति है जिसमें उसके स्वाछ हृदय का प्रतिविंब है ।

अभ्यासर्थ प्रश्न

7.4 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'संस्कार' शीर्षक कहानी ही कथावस्तु लिखें ।

2. रमापति का चरित्र चित्रण करें ।

3. कामेश का चरित्र चित्रण करें ।

4. 'संस्कार' शीर्षक कहानी के कथ्य पर संक्षेप में प्रकाश डालें ।

5. अर्थ स्पष्ट करें

(i) ''मानव जिससे बचने की जितनी चेष्टा करता वह प्राय: उसके उतने ही निकट पहुँच जाता है ।

(ii) ''मानव का मन बड़ी विचित्र वस्तु है । हजारों धातुओं के रासायनिक सम्मिश्रण से भी अधिक विचित्र उसकी बनावट है । यदि कोई व्यक्ति अपने ही मन ही बातों को समझ नहीं सकता, तो दूसरों के मन ही प्रवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण भला कैसे कर सकता है ?

(iii) कामेश का स्वभाव एक गेंद के समान था । गेंद को जितने जोर से दीवार की ओर फेंकिए वह उतनी जोर से आपके पास आ जाएगी ।''

7.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग या घ) लिखें ।

1. 'संस्कार' शीर्षक कहानी किस भाषा में लिखी गई है ?

(क) तमिल (ख) हिंदी (ग) राजेश (घ) दिनेश

3. कामेश का चरित्र में किसकी अधिकता है ?

(क) घमंड (ख) स्वाभिमान (ग) राजेश्वरी (घ) कामिनी

5. 'संस्कार' शीर्षक कहानी का तेलुगु से हिंदी में किसने अनुवाद किया है ?

(क) प्रो० गणेश प्रसाद श्रीवास्तव (ख) हिमांशु श्रीवास्तव

(ग) निर्मल वर्मा (घ) डॉ० के० रामानायुड

उत्तर 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)

रजाई (पंजाबी कहानी)

कहानीकार-सुजान सिंह

8.1 उद्देश्यः

इस पाठ का उद्देश्य है पंजाबी कहानी 'रजाई' की समीक्षा करना ताकि छात्र इसके सारे तत्वों से पूर्णतः परिचित हो सकें और इस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने में समर्थ हो सकें ।

8.2 परिचयः

'रजाई' शीर्षक कहानी पंजाबी भाषा की कहानी है । उसके कहानीकार हैं-सुजान सिंह । सुजान सिंह प्रथम कोटि के प्रतिबद्ध कथाकार हैं । इनके अनेक कथा-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । इनकी अनेक कहानियाँ कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं । इनकी भावाभिव्यक्ति सहज है । ये जीवन के मार्मिक यथार्थ को अपनी कहानियों में उतारने में सफल हुए हैं ।

8.3 कहानी-कला की दृष्टि से 'रजाई' शीर्षक कहानी का मूल्यांकन

8.3 'रजाई' शीर्षक कहानी का कथानक

'रजाई' शीर्षक कहानी अत्यंत मार्मिक है । यह सामाजिक यथार्थ की कहानी है । इस कहानी में मध्यवर्गीय मनोविज्ञान की उस बुनावट का चित्रण है जो समाजिक यथार्थ से अपनी आकृति ग्रहण करती है ।

मास्टर साहब पाँच बच्चो के पिता हैं । उनका वेतन सब कुछ मिलाकर एक सौ साढ़े सत्ताईस रुपए है । पाकिस्तान से शारणार्थी होकर आए तीन संबंधी भी उनके साथ ही रहते हैं । कभी उन्होंने मास्टर साहब की मदद की थी । मानवता के नाम पर मास्टर साहब का भी उनकी मदद कर रहे हैं । घर पर रखना, खिलाना-पिलाना सबकुछ । सर्दी का मौसम आ चुका है । कम-से-कम एक रजाई की सख्त जरूरत है, पर रजाई आएगी कैसे ! लाख कोशिश करने पर भी मास्टर साहब रजाई खरीदने में असमर्थ हैं । कबाड़ी की दुकान पर वे एक टँगी हुई रजाई देखते हैं । दाम पूछते हैं, पर कोई देख न ले, इस डर से दिनमें उसे नहीं खरीद पाते । उन्हें लगता है कि मोल-जोल कर के कबाड़ी वाले से वह रजाई खरीदी जा सकती है । नहीं तो वे नई रजाई के लिए बीस रुपए का जुगाड़ कैसे कर पाएँगे ।

रविवार था, छुट्टी का दिन । मास्टर साहब कबाड़ी की दुकान पर जाते हैं । सात रुपए में सौदा पट जाता है, वे रजाई खरीद लेते हैं । दस कदम ही आगे जाते हैं कि एक दरजी चिल्लाकर कहता है-मुर्दो की उतारी हुई रजाई खरीद ली । ट्यूशन पढ़नेवाला उनका शिष्य भी कहता है-यह तो मुर्दों की उतारी हुई रजाइयाँ बेचता है, मास्टरजी ! मास्टर साहब अपने शिष्य को इस तरह जवाब देते हैं कि उसे लगे कि उन्होंने अपने लिए नहीं,

किसी अति जरूरमंद को देने के लिए खरीदा है । दूसरे दिन जब शिष्य पढ़ने आता है तब मुर्दोवाली वही रजाई मास्टर साहब की खाट पर पड़ी देखकर कहता है'' क्यों मास्टरजी, यह वहीं रजाई है न ? मास्टर साहब इस प्रश्न का उत्तर किसी झूठ से नहीं दे सकते, अत:वे अपने शिष्य से कहते हैं--''वही है बेटा, परंतु आज मैं, तुझे पढ़ा न सकूँगा, मेरी तबीयत खराब है, तू कल आना ।

मास्टर साहब नई रजाई अपने लिए मांग लेते हैं और अपनी रजाई अपनी लड़कियों के लिए दे देते हैं । रजाई ओढ़ते समय मास्टर साहब सोचते हैं-यह समाज भी विचित्र है ! इसकी बनावट ही कुछ ऐसी है । धनियों की प्रवृत्ति धन-संग्रह ही होती है जिसके चलते गरीब लगातार गरीब होते जा रहे हैं । उनके तन पर न सही ढंग का कपड़ा है ओर न पेट में भूख शांत करने का अन्न । मुर्दो पर से रजाई हटाकर उसका व्यापार किया जा रहा है, यह तो समझने की बात है पर जीवितों का जो हक मारा जा रहा है, वह बात समझ में नहीं आती । जिस समाज में एक शिक्षक मुर्दो ही रजाई ओढ़ने को अभिशप्त हो, वह समाज भला सभ्य और विकसित कैसे कहला सकता है ।

यह कहानी समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को अभिव्यक्त करती है । साथ ही यह कहानी अन्य सामाजिक विडंबनाओं की ओर भी संकेत करती है । बड़े परिवारवाले को डिपो से सस्ता राशन नहीं मिलता है । जिसे सस्ता राशन की आवश्यकता है, उसे वह नहीं मिलता, मिलता है उसे जिसे उसकी जरूरत नहीं होती । मध्यमवर्ग अपनी इज्जत और प्रतिष्ठा के लिए घुटनभरी जिन्दगी जीता है । वह भीतर से रोता है और बाहर से हँसता हुआ चेहरा प्रस्तुत करता है । मास्टर साहब की विषण्णता के चित्रण के माध्यम से कहानीकार ने मध्यमवर्ग की परेशिनियों का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत किया है ।

8.3.2 कहानी के पात्र

8.3.2.1. मास्टर साहब का चरित्र चित्रण

मास्टर साहब मध्यमवर्गीय परिवार के मुखिया हैं जिनके ऊपर पाँच बच्चों, पत्नी और तीन शारणार्थी संबंधियों के पालन पोषण की जिम्मवेरी है । एक सौ साढ़े सत्ताईस रुपए उनका वेतल है जिसमें पूरे परिवार का किसी प्रकार गुजारा होता है । बड़ी मुश्किल से परिवार चलानेवाले मास्टर साहब हमेशा चिंताओं से घिरे रहते हैं । समाज में उनकी इज्जत है और इस इज्जत ने उन्हें नैतिकता के भीतर रहने को प्रेरित किया है । वे कोई गलत काम नहीं कर सकते, क्योंकि वे अध्यापक हैं । अध्यापक कोई अनैतिक कार्य करे, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती । ''मास्टर झूठ नहीं बोल सकता । उसे हर कोई भद्र पुरुष कहता है ।..मास्टर पूरा कानून को माननेवाला था । मास्टर साहब देशभक्त भी है । अपने या अपने उादमियों के कारण वह देश और जाति की हानि सहन नहीं कर सकता ।''

मास्टर साहब सच्चे अर्थों में मानव हैं । पाकिस्तान से शरणार्थी होकर आए तीन संबेधियों को अपने घर पर ही रखा है, क्योंकि उन लोगों ने भी मास्टर साहब के बुरे दिनों में काफी मदद की थी । उनके चरित्र में कृतज्ञता की महत्ता है । वे जिस समाज में रहते हैं, उसकी हर चाल पर उनकी निगाह है । वे अच्छी तरह जानते हैं कि सामाजिक विडंबना और विषमता की जड़ क्या है । धनी वर्ग परिस्थितियों को अपने हाथ में रखता है,

पर गरीब लोग परिस्थितियों के दास होते है । अच्छा वेतन मिलने के बावजूद परिवार बड़ा होने के चलते मास्टर साहब आर्थिक विपन्नता में रहते हैं और ठंढ से बचने के लिए उन्हें कबाड़ी की दुकान से मुर्दे की रजाई खरीदने पर बाध्य होना पड़ता है ।

मास्टर साहब मध्यवर्गीय परिस्थिति के दबाव में दयनीय हो गए हैं । वे 'इज्जत' को आँच नहीं आने देने पर दृढ़ संकल्प हैं । इसी इज्जत के लिए उन्हें अपने शिष्य से झूठ भी बोलना पड़ता है । जब उनका शिष्य उन्हें कबाड़ी की दुकान से मुर्दे की रजाई खरीदते हुए देख लेता तब मास्टर साहब उससे इस तरह बेपरवाह होकर बात करते हैं मानो वे रजाई अपने लिए नहीं किसी को मदद देने के लिए खरीद रहे हैं । पर जब शिष्य उस रजाई को उनके घर में ही देख लेता है तब वे झेंप जाते हैं, उनकी 'इज्जत' धूमिल होने लगती है । जीवितों से रजाई छीन लेनेवाले धनी वर्ग पर उनका क्रोध उबल पड़ता है ।

8.3.2.2 कहानी के अन्य तत्त्व

'रजाई' शीर्षक कहानी का कथानक एक मार्मिक घटना पर आधृत है सर्दी पड़ने लगी है । रजाई की कमी है । मास्टर साहब बीस रुपए का प्रबंध नहीं कर पाते कि नई रजाई आए । अंत में कबाड़ीवाले से मुर्दे की रजाई खरीदने को बाध्य होते हैं । मास्टर साहब यह सोचने लगते हैं कि वह कौन है जो मुर्दों की रजाई उतार देता है और कौन जीवतों से । कहानी अपने मार्मिक कथ्य से सामाजिक विषमता पर जोरदार प्रहार करती है ।

वातावरण ही सृष्टि में मास्टर साहब के मनोविज्ञान का रसायन अदभुत कार्य करता है । मास्टर साहब के साथ 'इज्जत' जैसी कोई चीज है जो उनके साथ हमेशा चिपकी रहती है । रजाई खरदनी अनिवार्य है पर उतने पैसे नहीं है । कवाड़ी की दुकानपर लटकी हुई रजाई को देखकर मास्टर साहब उसे खरीदना चाहते हैं पर 'इज्जत' बाधक बनती है । इस स्थिति की वर्णन कहानीकार ने प्रभावशाली ढंग से किया है ।

कहानी वर्णानात्मकता में अपनी विकासयात्रा पूरी करती है । बीच-बीच में आए संवाद सार्थक हैं । उसकी भाषा अपनी सादगी में मुखर है । जहाँ व्यंग्य चित्रित होता है, वहाँ भाषा काफी संयत है । मनोवैज्ञानिक स्थिति के चित्रण के समय भाषा चित्रात्मक हो गई है ।

कहानी का प्रतिपाद्य अंतिम वाक्य में स्पष्ट रूप से व्यंजित हुआ है । तात्त्विक संश्लिष्टता की दृष्टि से यह कहानी अत्यंत मार्मिक और सफल है ।

8.4 व्याख्या के अंश

1. ''वह सोच रहा था कि कैसे परिस्थितियाँ गलतियों को शुद्धियाँ और शुद्धियों को गलतियाँ बना देती हैं । काश कि परिस्थितियाँ हर व्यक्ति के बस में होतीं ।....परिस्थितियों की कुंजी केवल धनिक के हाथ में ही नहीं होती ।

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ' की 'रजाई' शीर्षक कहानी से लिया गया है । कहानीकार हैं पजाबी भाषा के प्रसिद्ध कहानीकार सुजानसिंह ।

कहानी के नायक मास्टर साहब परिस्थितियों पर विचार करते हैं कि मनुष्य के जीवन में परिस्थितियों का

बहुत बड़ा हाथ होता है । परिस्थितियाँ कभी 'गलत' को सही कर देती हैं और कभी सही को गलत कर देती हैं । मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है । यदि परिस्थितियाँ मनुष्य के वश में होतीं तो इस संसार में कोई दु:खी नहीं होता । पर कुछ हद तक धनियों के हाथ में परिस्थितियोंकी कुंजी होती है । वे अपने लाभ के लिए उस कुंजी से बंद परिस्थितियों के ताले को खोल सकते हैं । परिस्थितियों का जो तो गरीबों पर चलता है, क्योंकि उनके पास उन्हें खोलने के लिए कुंजी नहीं होती । बुरी-से-बुरी परिस्थितियों को भी धनी-वर्ग अपने धन के बल पर अपने अनुकूल बना सकता है ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'रजाई' शीर्षक कहानी का कथानक प्रस्तुत करें ।

2. मास्टर साहब का चरित्र-चित्रण करें ।

3. कहानी-कला की दृष्टि से 'रजाई' कहानी की समीक्षा संक्षेप में करें ।

4. 'रजाई' शीर्षक कहानी के कथ्य (प्रतिपाद्य) को संक्षेप में प्रस्तुत करें ।

5. आशय लिखें-''कितने समयतक वह सोचता रहा कि कौन मुर्दों से रजाई उतार लेता है और कौन जीवितों से ।''

8.5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही प्रश्न का संकेताक्षार (क, ख, ग या घ) लिखें ।

1. मास्टर साहब के कितनी संतानें थीं ?

(क) चार (ख) पाँच (ग) सात (घ) तीन

2. परिस्थितियों की कुजी किनके हाथ में होती है?

(क) बलवानों के हाथ में (ख) विद्वानों के हाथ में

(ग) धनियों के हाथ में (घ) इंसानों के हाथ में

3. महाभारत के किस पात्र के झूठ बोलने की चर्चा 'रजाई' शीर्षक कहानी में हुई है ?

(क) भीम (ख) नकुल (ग) सहदेव (घ) युधिष्ठिर

उत्तर- 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)

ऐसा और वैसा (मराठी कहानी)

-गंगाधर गाडगिल

9. उद्देश्य:

इस पाठ का उद्देश्य है छात्रों को 'ऐसा और वैसा' शीर्षक कहानी से परिचित कराना ।

9.2 परिचय:

'ऐसा और वैसा' शीर्षक कहानी मराठी भाषा की कहानी है । इसके कहानीकार हैं-गंगाधर गाडगिल । ये मराठी नई कथा को सुदृढ़ आधार एवं दिशादेनेवाले प्रवर्त्तक कहानीकारों में से एक हैं । प्रस्तुत कहानी घटनाप्रधान कहानी है । अत:, इसमें वर्णानात्मकता की प्रधानता की प्रधानता है ।

9.3 काहनी-कला की दृष्टि से 'ऐसा और ऐसा' शीर्षक कहानी का मूल्यांकन करें।

9.3.1 कथानक:

प्रस्तुत कहानी के प्रधान पात्र सदा काका हैं । कहानी दादी के इर्द-गिर्द घूमती है । सदाकाका टीप-टाप से रहनेवाले व्यक्ति हैं । ये अपनी पत्नी से बहुत प्यार करते हैं, पर उन्हें अपनी पत्नी की दो चीजें एकदम पसंद नहीं हैं-सोने के समय उनकी आँखें पूरी तरह मुँद नहीं पाता और कभी-कभी उनका मुँह खुला रह जाता है । सदाकाका की पत्नी का नाम नलिनीबाई है । पत्नी के मरने के बाद सदाकाका को उन दोनों बुरी चीजों से मुक्ति मिल जाती है ।

सदाकाका अपनी वजह से दूसरों को कष्ट देना नहीं चाहते हैं । सदाकाका को कोई बीमारी नहीं है । एक दिन सदाकाका अचानक इस दुनिया को छोड़ देते हैं । रात को सोते हैं, तो सोए ही रह जाते हैं । उनकी बहू उनके कमरे में जाती है, तो उन्हें मृत देखकर जोर-जोर से चीखने लगती है । लोग जमा हो जाते हैं । सदाकाका की इच्छा थी कि उनके गुजर जाने के याद चार लोग उनकी बाद में आँसू गिराएँ, उनकी याद करें, उनकी तस्वीर घर में लगाई जाए, लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता । उनकी एक लड़की उनके पास है, दूसरी लड़की अपनी ससुराल में है । स्वर्गीय सदाकाका का फोटो घर में नहीं लगता । उसके विपरीत उनके दो फोटो जो घर में लगे हुए थे, उन्हें भी निकाल दिया जाता है, क्योंकि उन्हें देखकर उनकी बहू गश खाकर गिर पड़ती है । उसके मन में यह बात घर कर गई है कि उसका ससुर बुरा चेत रहा है, इसीलिए वह बीमार पड़ जाती है । लड़का अपने पिता से इसलिए खफ हो जाता है कि जिस दिन उसकी कंपनी में जाने के लिए सुयोग्य कर्मचारियों का चुनाव होनेवाला या उसी दिन उसके पिताजी चल बसे । बेचारे पिता को (सदाकाका को) न अपनी संतान से आदर मिलता है धरि समाज से ।

सदाकाका के तीन संतानें हैं- एक लड़का, दो लड़कियाँ । लड़का और बड़की लड़की की आर्थिक स्थिति ठीक है, पर छोटी लड़की धनी घर में नहीं ब्याही जाने के कारण आर्थिक कठिनाइयों में रहती और सदाकाका इसीलिए उसे अधिक स्नेह देते थे और हमेशा आर्थिक मदद किया करते थे । सदाकाका के स्वर्गीय होने के बाद उनका लड़का उनका सारा धन हड़प लेना चाहता है, अपनी बहनों को कुछ देना नहीं चाहता । लड़की उसके लिए झगड़ा करती है । ताने और झगड़े से आजिज होकर बहू सास के गहनों का डिब्बा उसके सामने पटक देती है, बड़ी लड़की उसे लेकर अपनी ससुराल चली जाती है । भाई के कहने पर अपनी छोटी बहन के लिए डिब्बे से एक गहना निकालकर रख देती है । छोटी बहन कुछ लेने के लिए नहीं आती ।

लड़का अपने पिता का कावर्ड खोलता है और फिर चाभी लगना भूल जाता है । नौकारानी ऐसा सुयोग पाकर डिब्बे से माला निकाल लेती है । पूछने पर कहती है कि मासिक ने उसकी सेवा से प्रसन्न होकर यह माला दी है । बहू औरा बेटा दोनों पिता के आचरण पर शंका करने लगते हैं । लोगों को जब इस घटना का पता चलता है तब वे भी सदाकाका के बारे में अन्यथा सोचने लगता है । यही है विडंबना सदाकाका की चरित्र के । वे साफ-सुथरे हैं, पर परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हैं कि वे दुश्चरित्र की श्रेणी में भी परिगणित होने लगते हैं ।

सदाकाका के पास काले पत्थर की मूर्ति थी । गणेश की मूर्ति था । पिता की यादगार के रूप में उस मूर्ति को छोटी लड़की अपने घर लाती है । उस मूर्ति की वहीं श्रद्धापूर्वक पूजा करती है । कुछ ही दिनों में चचेरे ससुरकी मिल्कियत उसके कब्जे में आ जाती है । उनके मरने पर उनकी वसीयत के मुताबिक उनकी मिल्कियत छोटी बेटी को मिलती है । बेटी सब जगह कहती-फिरती है-''पिताजी बड़े सदाचारी थे । उनका पुण्य गणपति के साथ मेरे घर में आ गया । उसका फल मुझे मिला ।

आस-पासके लोग भी आकर गणपति की मनौतियाँ मनाने लगते हैं । राजनीतिक क्षेत्र के एक आदमी को मनौती के चलते कि चलते बड़ा लाभ होता है । वह चुनाव जीत जाता है । कृतज्ञता में वह गणपति के लिए चाँदी का मंदिर आदि सदाकाका बनवा देता है । गणपति की कृपा के चलते मंत्रिमंडल में सम्मिलित कर लिया जाता है । गणपति और सदाकाका का यश दिनानुदिन फैलने लगता है । लोग गणपति की पूजा करने के साथ सदाकाका को फोटो पर भी फूल चढ़ाने लगते हैं । सबकी यही धारणा है कि सदाकाका कोई सिद्ध पुरुष थे । मंत्री महोदय रमापति के लिए देवालय बनवा देते हैं और उसमें गणपति की प्राण-प्रतिष्ठा कर दी जाती है । गर्भद्वार पर एक तरफ सदाकाका का फोटो लगाया जाता है और दूसरी तरफ मंत्री महोदय का ।

सदाकाका जीवित होते, तो यह सब देखकर उन्हें यही लगता कि सबके-सब मूर्ख और जड़ हैं ।

सदाकाका का लड़का यह सब देखकर चिढ़ता है और उसकी बड़ी बेटी गणपति की मूर्ति को लेकर छोटी बहन से झगड़ा करती है ।

9.3.2 सदाकाका का चरित्र-चित्रण

सदाकाका टीप-टाप से रहनेवाले व्यक्ति हैं । उनके बारे में यह प्रचलित है कि ये व्यवस्थित व्यक्ति हैं । पर, यह कितना सही है, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । उनके तीन संतान हैं-एक बेटा और दो बेटियाँ । ये उनसे प्रेम करते हैं । ये नहीं चाहते कि उनकी वजह से किसी को कोई कष्ट उठाना पड़े ।

ये पूजा-पाठ करते हैं पर अंधविश्वासी नहीं है । धार्मिक ढोंग को ये महत्त्व नहीं देते । उनके पिताजी तीर्थ-यात्रा से लौटते समय काले पाषाण की एक मूर्ति लाए थे । मूर्ति गणपति की थी । चूँकि पिताजी वह मूर्ति लाए थे, अत: ये हर दिन उसकी पूजा किया करते थे । पूजा भी कोई समारोहपूर्वक नहीं करते थे । चार फूल चढ़ा देना और नमस्कार कर लेना ही उनकी पूजा थी ।

सदाकाका के जीवन में नैतिकता का विशेष महत्त्व है । ये कोई काम नीति और अनीति की समीक्षा करके ही करते हैं । ये एक साधारण इंसान है और साधारण इंसान की तरह ही इनकी इच्छाएँ हैं सदाकाका की इच्छा है कि उनके गुजर जाने के बाद चार लोग इनकी याद में आँसू गिराएँ, इनकी याद करें । इनकी तसवीर घर में लगाई जाए । लेकिन उनके स्वर्गवासी होने पर ऐसा कुछ भी नहीं होता ।

9.3.2 कहानी के अन्य तत्त्वस

कहानी घटनाप्रधान है । इस कहानी में विष्णु, वामन, रिबेही, अनंत, नौकारानी, जनू, राजनेता आदि के प्रसंग आते हैं । विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से सदाकाका के जीवन की विडंबना को प्रस्तुत किया गया है । सदाकाका के बेटा, लड़कियों, मित्रों आदि के द्वारा उनके विडंबनापूर्ण जीवन को रेखांकित किया गया है । कहानी विभिन्न प्रसंगों में उलझती चलती है, इसलिए इसका स्वभाविक प्रवाह शिथिल-सा दिखता है । कहानी का मध्य भाग यर्थाथ चित्रण के कारण आकर्षक बन पड़ा है । उसके अंत में अंधविश्वास पर सार्थक व्यंग्य किया गया है । सदाकाका का चरित्र अनिश्चितता में खोया हुआ है । भाषा सहज और व्यंजनापूर्ण है । कहानी का प्रतिपाद्य बंद-सा है । कहानी के अंत में लोकविश्वास, लोकाचार और राजनीति का संस्पर्श है । कुल मिलाकर कहानी सुगठित नहीं है, अपनी संरचना में बिखरी सी है । उसकी एकान्विति खंडित है । शीर्षक (ऐसा और वैसा) केअनुसार सदाकाका का चरित्रगत विकास नहीं पाया है । सदाकाका वैसे नहीं है जैसा लोग समझते हैं, वे ऐसे और वैसे में उलझे हुए हैं । उनका चरित्र स्पष्ट नहीं होता ।

व्याख्या

1. "कुछ ऐसा-वैसा मामला जरूर होगा । अपना शालीन दिखनेवाला बाप ऐसा भी करता था । यह मालूम होने पर दुनिया पर से उसका विश्वास ही डवाँडोल हो गया । अब उसे लगा कि अच्छा व्यवहार करने की कोई जिम्मेदारी उसके ऊपर नहीं है ।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ की 'ऐसा और वैसा' शीर्षक कहानी से ली गई हैं ।

सदाकाका की मृत्यु के बाद उनके बेटे ने कबर्ड खोला जिसमें एक डिब्बे में गहने रखे हुए थे । गलती से वह चाभी लगाना भूल गया । नौकरानी ने देखा कि कबर्ड खुला हुआ है । उसने डिब्बे से एक माला चुरा ली । जब घरवालों की नजर उस माला पर पड़ी तब उससे पूछताछ होने लगी । घर की नौकरानी ने बताया कि वह माला घर के मालिक सदाकाका ने उसे उनकी सेवाटहल के लिए प्रदान की थी । घर के लोगों को आशंका हुई । उसने वैसी कोई सेवा नहीं की थी जिसके लिए सदाकाका उसे मूल्यववान माला देते । बेटा-समेत घर के लोगों को यह आशंका हुई के जरूर सदाकाका और नौकरानी में कोई संबंध था । सदाकाका के बेटे

को तो बड़ा दु:ख हुआ । उसने अपने पिता के बारे में ऐसा सोचा ही नहीं था कि वे 'ऐसे' होंगे । पिता के प्रति उसके मन में निराशदर का भाव भर आया । पिता के बारे में वह सोचता ही नहीं था कि वे ऐसे होंगे । पर, वे तो वैसे ही निकले ।

सदाकाका के बेटे ने सोचा कि जब नैतिक से दिखनेवाले पिता ने इतना भारी अनैतिक काम किया है तब उस पर ही अच्छा व्यवहार करने की जिम्मेवारी क्यों हो । उसका मन गलत दिशा ही ओर भटक जाता है ।

प्रस्तुत अवतरण कहानी के गूढ़ रहस्य को खोलने की कुंजी है ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

9.5 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'ऐसा और वैसा' शीर्षक कहानी का सारांश प्रस्तुत करें ।

2. सदाकाका का चरित्र-चित्रण संक्षेप में करें ।

3. घर की नौकरानी वाला प्रसंग संक्षेप में लिखें ।

4. सदाकाका के चरित्र पर प्रकाश डालें ।

5. 'ऐसा और वैसा' शीर्षक कहानी के कथ्य पर प्रकाश डालें ।

6. कहानी-कला की दृष्टि से 'ऐसा और वैसा' की संक्षिप्त समीक्षा करें ।

9.6 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें ।

सदा काका के कितनी संतानें थीं ?

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पाँच

2. नौकरानी ने क्या चुरा लिया ?

(क) माला (ख) पायल

(ग) साड़ी (घ) घड़ी

3. सदाकाका की बड़ी लड़की थी-

(क) शिक्षिका (व्ख) वकील

(ग) झगड़ालू (घ) विनम्र

4. सदाकाका के पास किसकी मूर्ति थी ?

(क) शंकर (ख) विष्णु

(ग) गणपति (घ) महावीर

5. गणपति के लिए चाँदी का मंदिर किसने बनवाया ?

(क) सादाकाका के पुत्र ने (क्ष) सदाकाका के दामाद ने

(ग) सदाकाका की छोटी बेटी ने (घ) राज़नेता ने

6. सदाकाका के संबंध में सबकी धारणा क्या थी ?

(क) वे सिद्ध पुरुष थे । (ख) वे झूठे थे

(ग) वे चोर थे (घ) वे बेईमान थे ।

उत्तर- 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ) 6. (क)

'उसने कहा था'

चंद्रधर शर्मा गुलेरी (हिंदी)

10.1 उद्देश्य:

इस पाठ का उद्देश्य है छात्रों को 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी से पूर्णरूप से परिचित कराना ताकि वे इस काहनी की समीक्षा करने में सफल हो सकें ।

10.2 परिचय:

'उसने कहा था' शीर्षक कहानी के स्वयिता चंद्रधर शर्मा गुलेरी हैं । यह कहानी हिंदी की ही नहीं अपितु विश्व की प्रेम-संबंधी श्रेष्ठ कहानियों में परिर्गाणत होती है । यह कहानी 1915 में प्रकाशित हुई थी । 'चंद्रध र शर्मा गुलेरी अपने युग के अत्यंत प्रतिभाशाली और समर्थ रचनाकार थे । वे श्रेष्ठ निबंधकार, कहानीकार, संपादक भाषाविद् अन्वेषक, पुरातत्त्वविद् एवं प्राच्यविद् थे ।

10.3 कहानी-कला की दृष्टि से उसने कहा था कहानी का मूल्यांकन:

10.3 कथानक :

('उसने कहा था' शीर्षक कहानी का सारांश) प्रस्तुत कहानी प्रेम की कालजयी रचना है । कहानी अमृतसर के भीड़-भरे बाजार से शुरू होती है जहाँ आठ वर्ष का लड़का (लहना सिंह) आठ वर्ष की लड़की (बाद मे सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी) को ताँगे के नीचे आने से बचाता है । यही घटना लड़का और लड़की के बीच प्रेम के अविचल विश्वास की नींव रखती है । लड़की अपने मामा अतर सिंह के यहाँ रहती है और लड़का भी अपने मामा के यहाँ गुरूबाजार में रहता है । दोनों बाजार से सामान खरीदने के क्रम में बराबर मिलते रहते हैं । एक दिन लड़के ने लड़की से पूछा तेरी कुड़माई (सगाई) हो गई ? लड़की लज्जित होकर भाग जाती है । पर कुछ दिनों के बाद जब लड़का पुन: वही सवाल पूछता है तब लड़के ही आशा के विपरीत उत्तर देती है । लड़की से यह सुनकर कि उसकी शादी तय हो गई है, लड़का क्षुब्ध हो जाता है ।

लड़का बड़ा होकर फौज में भर्ती होता है । उसका नाम लहना सिंह है । ब्रिटिश सरकार की सेना में भर्ती होकर अँगरेजों की तरफ लाम पर जाते समय वह सूबेदार हजारा सिंह के बुलाने पर उनके घर जाता है । सूबेदारनी लहना सिंह को पहचान लेती है । सूबेदारनी को याद आता है कि लहना सिंह वही लड़का है जिसने पचीस वर्ष पूर्व अमृतसर में उसकी जान बचाई थी । वह लहना सिंह से कहती है-'' मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया । एक काम कहती हूँ । मेरे तो भाग फूट गए । सकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायकपुर में जमीन दी है, आज नमकहलाली का मौका आया है । पर सरकार ने हम तीमियों (स्त्रियों) को घघरिया पलटन

क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदाजी के साथ चली जाती ? अब दोनों (मेरे पति और मेरा पुत्र-बोधा सिंह) जाते हैं । मेरे भाग !..इन दोनों को बचाना । यह मेरी भिक्षा है । तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ ।''

लहना सिंह सूबेदारनी के बेटे (बोधा सिंह) और पति (सूबेदार हजारा सिंह) ही रक्षा-प्राणपण से करता है । वह बोधा सिंह की हर सुविधा का ध्यान रखता है । हाड़ को कँपा देनेवाली ठंढक में वह अपनी जरसी उतारकर बीमार बोधासिंह को पहना देता है । जर्मन सिपाहियों के आक्रमण में वह अपने घायल होने पर भी घायल सूबेदार को अस्पताल पहले भेजता है और अपनी चोट की बात को छिपाकर रखता है ।

लहना सिंह का घाव गहरा है । उस घाव के चलते उसके प्राण पखेरु उड़ जाते हैं । पर उसे इस बात की खुशी है कि उसने सूबेदारनी के कहने के अनुसार उनके पुत्र और पति के प्राण की रक्षा की है, वे सही सलामत हैं । प्रस्तुत कहानी प्रेमोत्सर्ग की कहानी है ।

10.3.2 सहनासिंह का चरित्र-चित्रण

''प्रेम के सात्विक स्वर्णतारों से लहनासिंह का चरित्र निर्मित हुआ है । प्रेम की रहस्यपूर्ण मर्यादा लहनासिंह के चरित्र को अपूर्व दीप्ति प्रदान करती है । लहना सिंह प्रेम का ऐसा दीवाना नहीं है कि उसका प्रेम बारबार छलक-छलककर अपनी कहानी सुनाया करे, वह तो प्रेम को अपने भीतर इस तरह घुला लेता है कि वही प्रेम बन जाता है । छलककर उसे अपना परिचय नहीं देना पड़ता । प्रारंभिक प्रेम में क्षोभ अवश्य व्यक्त हुआ है, पर बाद में यही आँसू बन जाता है-करुणा से द्रवित आँसू कहें या श्रद्धा की आँच में पिघला हुआ मन-लहना अपने उज्ज्वल प्रेम से लघु से विराट बन जाता है ।'' (डॉ. गणेश प्रसाद)

लहना सिंह भावप्रवण है, संवेदनशील है । उसकी भावुकता आँसुओं में नहीं, कर्तव्यपरायणता में परिलक्षित होती है । वह अपने प्रेम को यादों के घेरे से निकलकर बलिदान की द्रवित भूमि पर अधिष्ठित-प्रतिष्ठित करता है । प्रेम का एक ही अर्थ है-त्याग, उसे हलना सिंह अच्छी तरह जानता है । वह अपने प्रेम के लिए अपने प्राणों का त्याग करता है ।

लहना सिंह में अभूतपूर्व प्रत्युत्पन्नमतित्व है । वह तुरत जर्मन 'लपटन' को भाँप लेता है और उसका काम तमाम कर देता है ।

लहना सिंह में शौर्य है, दृढ़ निश्चय है और विपत्तियों से लड़ने की ताकत है । उसे अपने देश की धरती और गाँवकी मिट्टी से प्यार है । लहना सिंह के चरित्र की एक कमी खलती है कि उसमें पारिवारिक आत्मीयता का नितांत अभाव है । सूबेदारनी इस अर्थ में लहना सिंह से समृद्ध है ।

प्रसिद्ध आलोचक डॉ. गणेश प्रसाद ने सही लिखा है कि लहना सिंह विश्वास का रक्षक प्रेम की पवित्रता की दिव्य किरणों से मंडित अद्भुत शौर्य का प्रतीक है जिसमें उत्तरदायित्व बोध अहर्निश स्पंदित होता रहता है । लहना के चरित्र में शौर्य, करुणा और प्रेम की तीन धाराओं का संगम हुआ है । अतः उसका चरित्र तीर्थ की पवित्रता से ओत-प्रोत हो उठा है ।''

लहना सिंह का दायित्वबोध और बुद्धि दोनों स्पृहणीय है ।

10.3.2.3 सूबेदारनी का परिचय (चरित्र-चित्रण)

बारह बरस के लहना सिंह से अमृतसर में मिलनेवाली आठ बरस की लड़की अब, यानी पच्चीस वर्षों के बाद, सूबेदार हजारा सिंह ही पत्नी होकर सूबेदारनी कहलाने लगी है । उसके पाँच सतानें हुई, पर एक को छोड़कर कोई और नहीं बची । पहली संतान बोधा सिंह है । बोधा सिंह फौज में भर्ती हो गया हैं ।

लाम पर जाने से पूर्व जब लहना सिंह सूबेदार के गाँव जाता है तब सूबेदारनी उसे पहचान लेती है, उसका सोया हुआ प्रेम जाग्रत हो उठता है । उसके प्रेम का विश्वास अखंड आलोक में जलने लगता है । वह उसी विश्वास के आधार पर लहना सिंह से अपने पति और पुत्र की प्राण रक्षा की भीख माँगती है । लहना सिंह अपने उत्सर्ग से सूबेदारनी के कथन को पूर्ण करता है-वह बोधासिंह और हज़ारा सिंह के प्राणों की रक्षा करता है,अपनी जान की परवाह नहीं करता ।

''सूबेदारनी का व्यक्तित्व दाम्पत्य प्रेम, पुत्र-प्रेम और लहना के प्रति उदात्त प्रेम की एकान्वित नैतिकता पर आधृत है । सूबेदारनी इन दोनों प्रेमों में बिखरती नहीं है, अपितु इन दोनों की मर्यादाओं की रक्षा करती है । उस अर्थ में सूबेरदारनी महीयसी है ।'' (डॉ. गणेश प्रसाद)

10.4. कहानी के अन्य तत्त्वों की समीक्षा

कहानी में तीन मुख्य पात्र है-लहना सिंह, सूबेदारनी और सूबेदार हजारा सिंह । बोधा सिंह और वजीरा की उपस्थिति से कहानी का कथा-अंतराल भरा गया है । बोधा सिंह की अवतारणा कहानी को पूर्णता देने के लिए हुई है । पात्र सीमित हैं, अत: कहानी में मार्मिकतासे पूर्ण स्थलों का निर्माण आसानी के साथ हो सका है ।

वातावरण की दृष्टि में तो यह कहानी बेजोड़ है । कहानी का प्रारंभिक अंश और युद्ध स्थल का अंश अपनी रचनात्मकता के उत्कर्ष पर है । इन वातावरणों की जीवंतता ने कहानी के पूर्ण आवेग के साथ स्पंदित होने का मौका दिया है ।

संवाद नाटकीय हैं और मनोभूमि को पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत करने वाले हैं । भाषा ही चमक बेजोड़ है । भाषा चित्रात्मक है । भाषा पर स्थानीय रंग है । तत्समप्रधान शब्दों का विनियोग वातावरण के निर्माण में सहायक है । कहानी कला की दृष्टि से यह कहानी सफल है । इसमें कहानी के सारे तत्त्वों का संश्लिष्ट विनियोग हुआ है ।

व्याख्या के अंश

10.5. 'लड़ाई के समय चाँद आया था ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है । औश्र हवा ऐची चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में दंतवीणोपदेशाचार्य कहलाती ।''

प्रस्तुत गद्यावरण हमारी पाठ्पुस्तक में संकलित **उसने कहा था** शीर्षक कहानी से लिया गया है । चंद्रधरशर्मा गुलेरी इस कहानी के रचनाकार हैं ।

इस अवतरण में जर्मन और भारतीय सिपाहियों के बीच हो रहे युद्ध के समय के प्राकृतिक वातावरण का चित्रण हुआ है । हाड़ (हड्डी) तक को हिला देनेवाली ठंढ पड़ रही है । आकाश में निस्तेज चाँद उदित हो रहा है । कहानीकार ने चाँद की निस्तेज प्रभा के संबंध में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि संस्कृत कवियों ने चाँद को 'क्षयी' शब्द से अभिहित किया है । 'क्षयी' का अर्थ होता है नष्ट होनेवाला । कृणपाक्ष में चाँद प्रतिदिन नाश को प्राप्त होता है और पंद्रहवें दिन अमावस्या को वह पूर्णत: बिलुप्तसा हो जाता है । अत:, इसे क्षयी कहा जाता है । 'क्षयी' का दूसरा अर्थ होता है- क्षयरोगग्रस्त क्षयरोग ग्रस्त होने पर जैसे व्यक्ति कांतिहीन हो जाता है, ठीक उसी तरह युद्ध के समय आकाश में उगता हुआ चाँद कांतिहीन और निस्तेज है ।

युद्ध के समय बर्फीली हवा चल रही है । उस ठंढ से दाँत कटकटाने लगते हैं । 'दंतवीणा' के अर्थ होते हैं-दाँत कटकटाना, एक प्रकार का वाद्य । कहानीकार कहता है कि यदि बाणभट्ट (संस्कृत भाषा के रचनाकार) को उस समय की ठंढी हवा का वर्णन करना होता, तो वे उसकी बोधकता को दृष्टि पथ में रखते हुए अवश्य दंतवीणोपदेशाचार्य' के विशेषण से विभूषित करता । युद्ध के समय चलनेवाली सर्द हवा से लागों को कँपकँपी छूट रही है और उनके दाँत आपस में टकराकर कटकटा रहे हैं । जैसे वह हवा दंतवीणा (एक प्रकार का वाद्ययंत्र) का उपदेश दे रही है या वीणा पर संगीत का अभ्यास करा रही हो ।

10.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'उसने कहा था शीर्षक काहनी का सारांश लिखें ।
2. लहना सिंह का चरित्र चित्रण करें ।
3. सूबेदारनी का परिचय संक्षेप में दें ।
4. कहानीकला की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी की संक्षेप में समीक्षा लिखें ।
5. 'मृत्यु के समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है जन्म भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुँध बिलकुल उन पर से हट जाती है ।'' इसका आशय लिखें ।''

10.7 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क,ख, ग, या घ) लिखें ।

1. 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी के कहानीकार हैं

(क) प्रेमचंद (ख) चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(ग) गुलाबराय (घ) राधिकारमण प्रसाद सिंह

2. 'उसने कहा था' कहानी कब प्रकाशित हुई ?

(क) 1916 (ख) 1913

(ग) 1915 (घ) 1900

3. उसने कहा था मैं प्रारंभ में किस शहर का चित्रण है ?

(क) इलाहाबाद (ख) बनारस

(ग) चंडीगढ़ (घ) अमृतसर

4. लहना सिंह के गाँव का क्या नाम है ?

(क) मगरे (ख) माँझे

(ग) कटरा (घ) तेलघरिया

5. लहना सिंह की मृत्यु किसकी गोद में हुई ?

(क) कीरत सिंह (ख) बोधा सिंह

(ग) लहनासिंह (घ) बजीरा सिंह

उत्तर - 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 4 (ख) 5 (ख)

डाक्टरनी का कमरा (तमिल कहानी)

-आर. चूणामणि

11.1 उद्देश्यः

इस पाठ का उद्देश्य है छात्रों को 'डाक्टरनी का कमरा' शीर्षक कहानी से पूर्णतः अवगत कराना ताकि वे इस कहानी की विवेचना कर सकें ।

11.2 परिचयः

प्रस्तुत कहानी तमिल भाषा में लिखित है । उसकी कहानीकार है-आर. चूणामणि । कहानी को हिंदी में अनूदित कर हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित किया गया है । इस कहानी में महिला कहानीकार आर. चूर्णामणि ने नारी की संवेदनशीलता का गहरा और सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है । कहानी लेखिका ने नारी विमर्श की अनेक मार्मिक कहानियाँ लिखी हैं ।

11.3 कहानी-कला की दृष्टि से 'डाक्टरनी का कमरा' शीर्षक कहानी का मूल्यांकन

11.3.1 कथानक

देवकी और उसके पति षणमुखम डाक्टरनी के यहाँ गए हैं । देवकी की तबियत ठीक नहीं है । देवकी की उम्र बत्तीस बरस की है । उसकी शादी के ग्यारह साल हुए और उसके छह बच्चे हैं । देवकी के भीतर डर है कि कहीं जाँच के बाद डाक्टरनी उसे यह न कह दें कि फिर गर्भ ठहर गया है । वह भीतर-ही-भीतर भगवान से प्रार्थना करती है कि उसे गर्भ न ठहरा हो ।

डाक्टरनी जाँच करती है और देवकी तथा षणमुखम को बताती है कि देवकी माँ बननेवाली है । देवकी भीतर से सिहर उठती है । वह और संतान नहीं चाहती । उसका स्वास्थ्य बहुत गिर चुका है । डाक्टरनी बताती है कि गर्भ गिरा देने में ही देवकी का कल्याण है । यह भी हो सकता है प्रसवकाल में बच्चादानी निकाल दी जाए कि आइन्दे गर्भ न ठहर सके । षणमुखम डाक्टरनी की सलाह नहीं मानता । वह तमतमाकर डाक्टरनी से कहता है: देखिए डॉ. साहब, यह हमारा निजी मामला है । मैं कोई भिखमंगा नहीं हूँ । पाँच सौ रुपए कमा लेता हूँ अपने बच्चों की परवरिश कर सकता हूँ ।' लाचार देवकी कुछ बोल नहीं सकी । उसे लगा कि शरीर का सरा भार उठकर उसके सिर पर हावी हो गया है । उसने सिर झुका दिया । स्त्री पुरुष की इच्छा के आगे कमजोर पड़ गई ।

11.3.2 देवकी का पारिचय

देवकी पूरी नारी जाति की प्रतिनिधि के रुप में चित्रित की गई है । वह बत्तीस वर्ष ही है । शादी के ग्यारह

वर्ष हुए हैं और वह छह बच्चों की माँ है । माँ बनने या न बनने का अधिकार इसका नहीं है, उसके पति का है । उसके पति की इच्छा सर्वोपरि है । वह अपने पति की इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकती । इतनी कम अवस्था में वह संतानों के पैदा होने है चलते वह काफी कमजोर हो गई है । शरीर में खून की कमी हो गई है । अपनी समस्याओं से जूझती रहती है । उसके लिए वर्ष का मतलब केवल बच्चा पैदा करना रह गया है ।

देवकी पूर्णरूप से परवश है । वह मर सकती है, अपने पति की बात भी नहीं टाल सकती । विज्ञान इतनी तरक्की कर चुका है, पर वह इससे फायदा नहीं उठा सकती । वह न तो बच्चों के पैदा होने में फासला डाल सकती है और न अपने पति की इच्छा का विरोध कर सकती है; भले ही मर क्यों न जाए । देवकी एक लाचार और अभिशप्त नारी के रूप में चित्रित हो गई है । वह सर्वथा भावहीन विचारशून्य परवश नारी है । वह अपनी सहायता स्वयं नहीं कर सकती । उसे अपना गंतव्य मालूम नहीं । अपने पति के इशारे पर नाचनेवाली वह एक हीन नारी है ।

11.3.3 षणमुखम का परिचय

षणमुखम अहंकारी है । वह परम स्वार्थी और जड़ है । उसे बच्चे चाहिए, पर पत्नी नहीं । पत्नी तो बच्चे पैदा करनेवाली मशीन है उसके लिए । वह पत्नी का तनिक ख्याल नहीं रखता । पत्नी रक्ताल्पता से ग्रस्त है, पर उसे केवल बच्चा चाहिए । उसे मूर्ख कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं । मशीन को भी सुचारु रूप से चलाने के लिए ठंढा होने का अवसर मिलता है, पर देवकी बेचारी ऐसी मशीन है कि शादी के बाद उसे लगातार बच्चा पैदा करने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है ।

षणमुखम औसत ऊँचाई का है । उसकी कद-काठी अच्छी है । उसका चेहरा एक दम भावहीन और कसा हुआ है । वह सुदर्शन तो कतई नहीं है पर उसे कुरूप भी नहीं कहा जा सकता ।

षणमुखम परवरिश का विस्तृत अर्थ नहीं जानता । खाना खिलाना और कपड़े देने को ही वह परविश मानता है पर 'परवरिश' यही नहीं है । उसका ध्यान बच्चों के भविष्य परर एकदम नहीं है । पता नहीं चलता कि किस मनोवृत्ति के तहत वह बच्चे पैदा करने पर तुला हुआ है । इस तरह वह तो सनकी और झक्की मालूम पड़ता है । उसे टोकरी भारी लगती है और उसे नीचे रखने पर अराम मिलता है, पर अपनी पत्नी के ऊपर इतना 'भार' देने के बावजूद उसकी परेशानी पर उसका ध्यान नहीं जाता । वह आधुनिक युग में अतीत को अपने कंधों पर ढोनेवाला अहंग्रस्त जड़ व्यक्ति की तरह हमारे सामने आता है ।

11.0.3.4 कहानी के अन्य तत्वों की समीक्षा

'डाक्टरनी का कमरा' शीर्षक कहानी नारी एवं पुरुष मनोविज्ञान के बीच के संघर्ष को व्यक्त करती है । पुरुष किस तरह नारी पर हावी होता है और नारी किस तरह पुरुष के वश में होकर भीतर-ही-भीतर जलती रहती है, इसका प्रस्तुत कहानी में मार्मिक वर्णन हुआ है । युग-युग से प्रताड़ित नारी की मनोदशा का वर्णन इस कहानी में बड़ी मार्मिकताके साथ हुआ है । पुरुष का जड़ अहंकार और नारी की मूल वेदना इन दोनों को कहानी लेखिका ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ रेखांकित किया है । कहानी के अनेक स्थानों पर नारी के भीतर की वेदना को अभिव्यक्ति मिली है ।

तीन पात्रों के माध्यम से इस कहानी में पुरुष और नारी के सनातन द्वंद्व को उकेरा गया है जिसमें नारी की हार होती है । नारी अपने मरने की परवाह नहीं कर अपने पति की इच्छा पर अपने को समर्पित कर देती है । पुरुष की अहंपूर्ण जड़ता और नारी की मूकता को इस कहानी में प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति मिली है ।

अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में नारी के भीतर कैसी-कैसी आशंकाएँ उत्पन्न होती हैं और वह किन मनोदशाओं से गुजरती है, उसके चित्रण में कहानी लेखिका को महत्त्वपूर्ण सफलता मिली है । कहानी लेखीका ने वातावरण की सृष्टि से कहानी में जान डाल दी है । नारी के भीतर का सारा उद्वेलन वातावरण की जीवंत सृष्टि के कारण्ण पाठकोंतक संप्रेषित होता है ।

कथोपकथन (संवाद) संक्षिप्त और साभिप्राय है । कहानी की भाषा सरल और बोधगम्य है । वहीं अतिरिक्त अलंकरण की कोशिश नहीं की गई है ।

कहानी के अंत में कहानी लेखिका ने प्रतीक का सहारा लिया है और मजबूत व्यंग्य की सर्जना ही है । 'भारी टोकरी' के माध्यम से देवकी के 'भार' को प्रस्तुत किया गया है ।

कहानीकला के सारे तत्त्वों का सुंदर समन्वय इस कहानी में हो सका है । यह एक सफल कहानी है ।

11.4 व्याख्या के अंश

10.4. घर में पैर रखते ही उसने टोकरी नीचे रख दी 'उफ जान में जान आई । कितनी भारी थी टोकरी देवकीने सिर घुमाकर देखा ओर हँस दी । सच वह हँसी नहीं जैसे महाकाव्य था । प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ में संचलित तमिल कहानी 'डाक्टरनी का कमरा' से लिया गया है । इस कहानी की लेखिका हैं आर. चूणामणि । देवकी के साथ षणमुखम घर लौट आता है । लौटते समय बाजार से सब्जी ले आता है । सब्जी के चलते टोकरी भारी हो गई है । घर आने पर जब षणमुखम टोकरी नीचे रखता है तब उसे राहत मिलती है । जान में जान आती है । टोकरी सब्जी, दवा, दूध, पपीता और आम के चलते बहुत भारी हो गई थी ।

कहानी लेखिका ने भारी टोकरी के माध्यम से अनपेक्षित संतानों के कारण आर्थिक स्थिति पर पड़ते बोझ का प्रतीकात्मक चित्रण किया है । देवकी जब षणमुखम को भारी टोकरी को नीचे रखते देखती है वह हँस पड़ती है । कहानी-लेखिका कहती है कि देवकी की यह हँसी, हँसी नहीं है, महाकाव्य है जिसमें जीवन का संपूर्ण चित्रण होता है । देवकी की उस हँसी में उसके जीवन की सारी मनोदशाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है । उसकी हँसी से उसकी पीड़ा, निराशा, छटपटाहट, यंत्रणा, अवसाद-इन सबकी संपूर्ण अभिव्यक्ति है । उसकी इस हँसी में पुरुष वर्ग पर एक सार्थक व्यंग्य भी है ।

11.5 अभ्यासर्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'डाक्टरनी का कमरा' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें ।

2. कहानी-कला की दृष्टि से 'डाक्टरनी का कमरा' शीर्षक कहानी की संक्षिप्त समीक्षा करें ।

3. देवकी का परिचय दें ।

4. षणमुखम का चरित्र प्रस्तुत करें ।

5. 'डाक्टरनी का कमरा' कहानी का व्यंग्य स्पष्ट करें ।

11.6 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग या घ) लिखें ।

1. देवकी के पति का नाम है ?

(क) षणमुखम (ख) सप्रमुखम

(ग) रघुनायकम (घ) रघुवंशम

2. देवकी की हँसी क्या है ?

(क) एक उपन्यास (ख) एक कहानी

(ग) एक महाकाव्य (घ) एक गीतिकाव्य

3. देवकी के कितनी संतानें है ?

(क) पाँच (ख) छह

(ग) सात (घ) तीन

4. डाक्टरनी का कमरा कैसा था ?

(क) अव्यवस्थित (ख) गंदा

(ग) छोटा (घ) साफ-सुथरा एवं एंटीसेप्टिक

5. षणमुखम कैसा था ?

(क) विनम्र (ख) निरक्षर

(ग) अहंकारी एवं जड़ (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: १. (क) २. (ग) ३. (ख) ४. (घ) ५. (ग)

फाँसी (मलयालम)

-एम0 सुकुमारन

12.1 उद्देश्य:

इस पाठ का उद्देश्य है छात्रों को मलयालम कहानी 'फाँसी' से परिचित कराना और उन्हें इस योग्य बना देना कि वे कहानीकला की दृष्टि से इस कहानी की तात्त्विक समीक्षा कर सकें ।

12.2 परिचय:

'फाँसी' शीर्षक कहानी मलयालम भाषा में रचित है जिसका हिंदी अनुवाद हमारी पाठ्यपुस्तक में संगृहित हैं । इस कहानी के रचनाकार एम. सुकुमारन हैं । एम. सुकुमारन मलयालम के प्रसिद्ध कथाकार हैं । उनकी कथा-रचना में वामपार्टी के सिद्धांतों के प्रति कठोर प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है ।

12.3. कहानीकला की दृष्टि से 'फाँसी' की समीक्षा

12.3 कथानक

एक व्यक्ति ने बलात्कार करते हुए एक आदमी को नंगी औरत से अलग किया । उसने उस आदमी को समझाते हुए कहा-'' इस दुनिया में जब तम्हारी इच्छा खुद पूरी करनेवाली औरत मिल सकती है तब क्यों बलात्कार करते हो ? कल्पना करो कि मैं तुम्हारी जगह हूँ और वह औरत तुम्हारी वहन है । तुम जहाँ हो मैं खड़ा हूँ । तब क्या तुम मुझे इस दुनिया में जीने दोगे ? जाओ उस सरोवर के शीतल जल में कुछ देर पड़े रहो ! विश्राम करो । तुम्हारे तन-मन ठंढे हो जाएँगे ।'' अपराध के बोध के साथ वह आदमी चला गया ।

कथा कहनेवाले व्यक्ति के पिताजी की मृत्यु हो गई थी । वह इस दुनिया में अकेला रह गया था । उसने एक आदमी को देखा जो आधी रात की चाँदनी से शुरु करके दोपहर की कड़ी धूप में काम करता जा रहा है । कथावाचक को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह आदमी किसी भी समय जुए का डंडे पर मुँह के बल लुढ़क सकता है । इसके भीतर सहानुभूति उमड़ आई । उसने उसे बाँए हाथ से सहारा दिया, उसके होठों में नारियल का पानी डाला उसे नारियल के पेड़ की छाँव में लिटाया । उसे आराम करने की सलाह दी और अपनी यात्रा में आगे निकल गया ।

कथावाचक ने देखा कुछ लोग भूखे-प्यासे पके धान के खेतों की रखवाली कर रहे हैं । उसने इन लोगों से कहा ''बोनेवालो, न बोनेवालों के आँगन पर ये अनाज जब तक पहुँचे, उसके पहले ही इसी रात में तुम फलस काट लो ।'' लोगों ने फसल काट ली । कथावाचक अपनी यात्रा पर आगे निकल गया ।

कथावाचक के शिष्य ने पूछा-'' हमें कैसा आदमी बनना चाहिए ?'' कथावाचक ने कहा-'' बच्चो, तुम

लोग मोती का सीप रहना । स्वाती के दिन दोपहर में पानी बरसता है और वर्षा ही बूँद सीपी के भीतर गिरती है । कहते हैं-ऐसी ही सीपी मोती बनती है । इसलिए इस नक्षत्र के उदय होने के समय, वे ऊपर आती हैं । तुम लोग भी इसी तरह रहना ।'' इसी बीच चार लंबे-तगड़े व्यक्ति उधर आए ।

कथावाचक के पूछने पर उनमें से एक ने कहाकि ग्राम के न्यायपाल ने तुझे बुलाया है । चारों उसे घसीटकर न्यायपाल के पास ले जाते हैं । न्यायपाल ने हाथ ऊपर उठाकर कथावाचक से कहा-''यहाँ की परंपरा के अनुसार पहले दंड भुगत ले । इस ग्राम में अपराधियों को ही सजादी जाती है । आरोपपत्र षढ़ कर सुनाऊँगा । पहले सजा भुगत लो ।

कथावाचक की पहली सजा थी-उसका दाहिना काट दिया गया । उसका अपराध था कि उसने यौवन-सुख मोगती स्त्री को दाहिने हाथ से युवा पुरुष से अलग कर दिया था । स्त्री ने इसकी शिकायत न्यायपाल से की थी ।

कथावाचक को दूसरी सजा दी गई-उसका बायाँ हाथ काट दिया गया । उसका अपराध था कि उसने बाँए हाथ से ही उसे मजदूर को सहारा दिया था जो अनवरत हल चलाता हुआ थक सा गया था । किसान ने न्यायपाल से इसकी शिकायत की थी । उसकी शिकायत थी कि कथावाचक ने किसी षड्यंत्र के चलते ही उसे नारियल का पानी पिलाकर शिथिल कर दिया, वरना उसने अपना खेत समय पर तैयार कर लिया होता, समय पर बुआई आदि को गई होती और समय पर उत्पादन भी हो गया होता । ऐसा होने से अनाज का अभाव नहीं होता । पर अब तो अनाज के अभाव के चलते लोग न्यायपाल के विरुद्ध खड़े हो जाएँगे ।

तीसरे दंड के रूप में उसकी पलकों को घोड़े की अयाल के धागे से सी दिया गया । कथावाचक ने शायद किसी षडयंत्र के चलते ही फसल कटवा दी थी । लोगों की शिकायत थी कि यह व्यक्ति यही चाह रहा था कि ग्रामवासियों और न्यायपाल के बीच दूरी बड़ जाए ।

तीसरे दंड के कारण कथावाचक की आँखों की रोशनी जाती रही ।

चौथे दंड के रूप में उसे फाँसी की सजा दी गई । उसका अपराध यही था कि वह उसी तरह का कोई भयंकर अपराध भविष्य में कर सकता है ।

न्यायपाल के तगड़े जवानों में से एक कथावाचक को फाँसी के तख्ते पर झुलाने के लिए अपने कंधे ले पर चला । कथावाचक ने उससे अपने प्राणों की भीख माँगी । 'मुझे बचाओ । मुझ बेकसूर को कम-से-कम अब बचाओ उसने कहा-'मैं तुम्हें बचाऊँगा । तुम्हें फाँसी के तख्ते पर नहीं चढ़ाऊँगा । जानता हूँ कि तुमने कोई अपराध नहीं किया है । भलाई के राज में तुम्हें मुकुट और राजोचित सम्मान मिलेगा । शांत रहो ।

फाँसी देनेवाला कथावाचक से कहता है कि यदि मैं तुम्हें फाँसी के तख्ते पर नहीं चढ़ाऊँगा तो तुम क्या करोगे, कथावाचक कहता है-''मैं यह गाँव छोड़ दूँगा । और कसी गाँव में खेतों की मेड़ से चलूँगा । मैं उन्हें कुछ-न-कुछ सिखाऊँगा । अब मेरे पास खाने लायक कुछ भी नहीं बचा है ।

न्यायापाल का चौथा लंबा-तगड़ा व्यक्ति कथावाचक को छोड़ देता है यह कहते हुए कि "तैरकर बच जाओ ! पश्चिम की दिशा में तेज बहाव है । उस तरफ न जाना"

12.3.2 पात्र

प्रस्तुत कहानी में दो मुख्यपात्र हैं-कथावाचक और न्यायपाल । उसके अतिरिक्त न्यायपाल के चार दबंग लंबे-तगड़े व्यक्ति और दूसरे अनेक छोटे-छोटे पात्र जैसे-स्त्री, किसान आदि ।

कथावाचक जनतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है और न्यायपाल अधिनायक तंत्र का प्रतिनिरधि । कथावाचक मानवधिकारों के प्रति जड़ मानस में चेतना भरता है । वह अन्याय का प्रतिकार करता है और शोषितों में अन्याय के प्रति पुरुष वर्ग के शोषण के विरुद्ध चेतना पैदा करना चाहता है पर उसे यथोचित सफलता नहीं मिलती । इसका मुख्य कारण है-जनमानस में जड़ परम्परा का बुरी तरह अधिकार जमा लेतना । कथावाचक अपने शिष्यों को मोती का सीप बनना सिखाता है । यानी, वह उनमें जीवन के प्रति आस्था, विश्वास और समर्पण की भावना भरना चाहता है ।

प्रस्तुत कहानी में अधिनायक तंत्र बनाम लोकतंत्र के संघर्ष की कथा कही गई है । कहानीकार इस कहानी के अंत में 'चौथे' व्यक्ति के द्वारा एक गूढ़ अर्थ को संप्रेषित करता है-पश्चिम की दिशा में तेज बहाव है, उस तरफ न जाना । गूढ़ार्थ यह है कि पश्चिम की नकल से हमें मुक्ति नहीं मिल सकती । हमें मुक्ति अपने स्वतंत्र चिंतन से ही मिल सकती है जो हमारी स्वस्थ परंपरा की सुंगध से परिपूर्ण हो ।

12.3.3 कहानी-कला के अन्य तत्त्वों की समीक्षा

प्रस्तुत कहानी में खौफ का वातावरण सृष्ट किया गया है और उस खौफ से मुक्ति के लिए संघर्ष का वातावरण तैयार किया गया है । कहानीकार ने खौफ के बीच से खौफ से मुक्ति का कथ्य संप्रेषित किया है । इसलिए यह कहानी पाठक-वर्ग पर पर्याप्त प्रभाव डालती है । भाषा में अभिधेयार्थ के साथ प्रतीकार्थ की संयोजना की गई है । पूरी काहनी में अनेक बिंब उभरते हैं जो कथ्य को प्राणवान करते हैं । संवाद-योजना कथा को आगे बढ़ाती है और कथ्य को दिशा देती है । आरोप सिद्ध हो जाने के पहले ही दण्ड का विधान कठोर अधिनायकतंत्र के खौफ को प्रस्तुत करता है जिसमें मानवाधिकार बुरी तरह मसल दिए जाते हैं, व्यक्ति ही स्वतंत्रता बुरी तरह कुचल दी जाती है और जनतांत्रिक मूल्य बुरी तरह उपेक्षित कर दिए जाते हैं । कहानी-कला के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा करने के बाद हम उस निष्कर्ष परर आते हैं कि यह कहानी अपने कथ्य को संप्रषित करने में पूरी तरह सफल है । 'खौफ' उस कहानी में एक पात्र बनकर आता है जो अपनी संपूर्ण भयंकरता के बावजूद कहानी के कथ्य को संप्रेषित करने में सहायक होता है ।

"यह कहानी जड़ चिंतन क विरुद्ध सामाजिक चिंतन के संघर्ष को संप्रेषित करती है ।" (डॉ० गणेश प्रसाद)

2.4 व्याख्या के अंश

"बच्चो, तुम लोग मोती का सीप रहना ।....तुम लोग भी उसी तरह रहना । पहले उपदेश सुनो फिर समझ लो उसके बाद.....।"

प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ में संकलित 'फाँसी' शीर्षक कहानी से लिया गया है । यह कहानी मलयालम भाषा में एम० सुकुमारन द्वारा रची गई है ।

कथावाचक अपने शिष्यों को सीपी बनने की सलाह देता है । वह कहता है कि सीपी जिस आस्था ओर विश्वास के साथ स्वाती नक्षत्र की बूँदों को धारणकर धैर्यपूर्वक उनका पोषण करती हुई मोती का निर्माण करती है, उसी तरह उनके शिष्यों को भी चाहिए कि जड़ विचारों के वातावरण में कहीं से नवीन एवं स्वतंत्र लोकतांत्रिक विचार की स्वाती बूँद अपने मस्तिष्क में डालें और मोती के आलोक की सर्जना करें । इसके लिए उन्हें अपूर्व धैर्य का अनुपालन करना होगा ।

यह अवतरण प्रस्तुत कहानी का महत्त्वपूर्ण अंश है जो कहानी को एक दिशा देता है । अंधकार के विरोध में प्रकाश के संघर्ष की गाथा बीज रूप में इस अवतरण में व्याप्त है ।

11.3 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'फाँसी' कहानी का सारांश प्रस्तुत करें ।

2. ''फाँसी' शीर्षक कहानी के कथ्य पर प्रकाश डालें ।

3. 'फाँसी' शीर्षक कहानी की समीक्षा संक्षेप में करें ।

4. 'फाँसी' शीर्षक कहानी की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालें ।

12.6 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग या घ) लिखें ।

1. 'फाँसी' शीर्षक कहानी के कहानीकार हैं-

(क) सुजान सिंह (ख) जैनेंद्रकुमार

(ग) गंगाधर गाडगिल (घ) एम0 सुकुमारन

2. 'फाँसी' कहानी में व्यक्ति को प्रथम दण्ड क्या दिया गया ?

(क) फाँसी (ख) दाहिना हाथ काट दिया गया

(ग) बायाँ हाथ काटा गया (घ) आँखें फोड़ दी गई

3. 'व्यक्ति' ने अपने शिष्यों को कैसी शिक्षा दी ?

(क) सीपी बनने की (ख) विद्वान बनने की

(ग) बुद्धिमान बनने की (घ) विनम्र बनने की

4. 'फाँसी' शीर्षक कहानी किस भाषा में लिखी गई है ?

(क) कन्नड़ (ख) मलयालम

(ग) हिंदी (घ) तेलगु

उत्तर १. (घ) २. (ख) ३. (क) ४. (ख)

झर गये फुलवा, रह गई बास (गुजराती)

"रघुवीर चौधरी"

अनुवादक-वीरेंद्रनारायण

13.1 उद्देश्य:

इस पाठ का उद्देश्य हे छात्रों के झर गए फुलवा रह गई बास शीर्षक कहानी से परिचित कराना तथा उन्हें इतना समर्थ बनाना कि वे कहानी कला की दृष्टि से इस कहानी की समीक्षा कर सकें ।

13.2 परिचय:

रघुवीर चौधरी रचित गुजरात कहानी 'झर गए फुलवा, रह गई बास' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है जो कथावाचक के द्वारा तटस्थ भाव से प्रस्तुत की जाती है । जो कथावाचक एवं विजया भाव से प्रस्तुत की जाती है । इस कहानी में कथावाचक एवं विजया के माध्यम से विवाह संस्था और प्रेम पर कहानीकार ने अपना विचार कथ्य के रूप में प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत कहानी का शीर्षक भावात्मक प्रतीकात्मकता से कथ्य को संक्षेप में प्रस्तुत करता है । फूल के झड़ जाने के बाद भी जिस तरह सुगंध वायुमंडल में पसरी रहती है, उसी तरह कथावाचक और विजय का प्रेम विवाह में परिणत नहीं होने पर भी अपनी मादकसुगंध से दोनों की अंतरात्मा में विराजमान है ।

13.3 कहानी-कला की दृष्टि से कहानी की समीक्षा

13.3 कथानक:

प्रस्तुत कहानी का कथानक एकदम संक्षिप्त है यह घटनाप्रधान कहानी न होर मनोवैज्ञानिक कहानी है अत: इसमें कथानक अत्यंत क्षीण है ।

केबिन के दरवाजे पवर दस्तक हुई । केबिन के अंदर के व्यक्ति ने कहा-एक मिनट । पर उसका एक मिनट' पाँच मिनट से अधिक हो गया । वह बाहर आया, पर दरवाजे पर कोई नहीं मिला । आगे जाने पर उसे विजया दिखाई पड़ी । विजया ने ही केबिन के दरबाजे पर दस्तक दी थी, और वह व्यक्ति विजया के पत्र को पढ़ने में इतना लीन था कि उसने दस्तक देनेवाली से एक मिनट की फुर्सत ले ली ।

विजया स्वदेश आई थी । वह अपने अतीत के 'प्रेम' को खोजती हुई केबिन के अंदर वाले व्यक्ति से मिलना चाहती थी ।

दोनों बातें करते हैं । दोनों का अतीत पूरी अँगड़ाई के साथ उपस्थित होता है । अतीत की हलचल वर्तमान

की धड़कन बनकर दोनों के भीतर मौजूद है । पर, जिस तरह अतीत में प्रेम एक मौन के कारण व्यक्त नहीं हुआ, उसी तरह वर्तमान में भी दोनों के भीतर प्रेम एक मौन समर्पण के साथ अव्यक्त रह जाता है । कभी विजया ने 'व्यक्ति' से कहा था कि उसने किसी से प्रेम किया था और प्रेम के बारे में उसे बताया भी था, पर उसने इशारा को नहीं समझा । विजया ने अपने प्रेम के बारे में जिसे कहा था, वह और कोई नही था, वही था जिससे वह प्रेम करती है और जिससे वह शादी करना चाहती थी ।

दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे, पर दोनों की गलती यह थी कि वे प्रेम को सीधे तौर पर रखने में समर्थ नहीं थे । दोनों में प्रस्ताव रखने का साहस नहीं था । 'व्यक्ति' की आँखों में प्रेम विवशता बनकर आँसू की बूँदों में कहीं गुप्त रूप से छलछला उठा था और विजय भी अपनी वेदना को मुस्कुराहट से टालने का प्रयास कर रही थी ।

दोनों एक-दूसरे के प्रेम के विश्वास की परीक्षा ले रहे हैं । दोनों को लगता है कि उनका प्रेम एक विश्वसनीय यथार्थ था । दोनों से कहीं चूक अवश्य हुई थी कि वे मिल नहीं पाए । कहानी में विडंबना वहाँ अभिवयक्त होती है जहाँ दोनों यह समझ जाते हैं कि उनसे भूल अवश्य हुई है । दोनों एक-दूसरे को दिलो-जान से चाहते हुए भी दाम्पत्य के पवित्र बंधन में बँध नहीं सके ।

13.3.2 पात्र

इस कहानी में दो पात्र हैं-विजया ओर कथावाचक । दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, पर अपने प्रेम को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते । परिणाम होता कि वे जीवन भर एक 'अभिलाषा' लिए भीतर-ही-भीतर घुटते रहते हैं । कहानी के दोनों पात्रों की मनोभूमि का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

13.3.3 कहानीकार ने इस काहनी में वातावरण की सार्थक दृष्टि की है । विजया विदेशसे अपने देश आती है और वह केबिन के भीतर के आदमी से मिलना चाहती है । दोनों ऑफिस से बाहर मिलते हैं । अतीत के पृष्ठ वर्तमान के टेबुल पर फड़ाफड़ा उठते हैं । दोनों विवाह और प्रेम पर संकेतों में बातें करते हैं । कथावाचक को अंत में पताछनता है कि वही वह व्यक्ति है जिससे विजया प्रेम करती थी और जिसके बोर में विजया बराबर संकेतों में कहती रहती थी, पर 'व्यक्ति' उसे समझ नहीं था रहा था । पूरी कहानी में प्रेम की इस गोपनीयता को सधे हाथों उकेरा गया है । और यह संभव हो सका है केवल उक अर्थवान वातावरण की सृष्टि करने के कारण

13.3.4 संवाद-योजना पात्रों की मन की गाँठों को खोलती चलती है और कथ्य को एक दिशा देती चलती है । भाषा भावनुकूल एवं पात्रों की मानसिक आवस्थाओं के अनुरूप है । कुल मिलाकर कहें तो यह कहा जा सकता है कि कहानीकार ने कहानी के सारे तत्वों का सुंदर विनियोग किया है । यह कहानी एक सफल कहानी है ।

13.4. व्याख्या:

13.4.1 ''कोई व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन की बात हमारे एकांत में कहे और हम उस बात को हृदय के किसी कोने में डुबा सकें उससे अधिक और क्या चाहिए । प्रस्तुत गधावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'भारत मी

श्रेष्ठ कहानियाँ में संकलित कहानी 'झर गए फुलवा रह गई बास' से लिया गया है । उसके रचनाकार कहानीकार हैं रघुवीर चौधरी । प्रस्तुत कहानी गुजराती भाषा में रचित है जिसका अनुवाद हवीरेंद्रनारायण सिंह ने प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत अवतरण कहानी के नायक का कथन है । कहानी का नायक कहता है कि यदि कोई व्यक्ति हमारे एकांत में अपने व्यक्तिगत जीवन की बात कहे और उस बात को हम अपने हृदय के किसी कोने में आदर पूर्वक जगह दें, तो समझना चाहिए कि इस स्थिति से हम अतिशय कृतार्थ हो रहे हैं । विश्वास की दृढ़ मनोभूमि में ही कोई व्यक्ति किसी से एकांत में अपने जीवन का गोपनीय प्रसंग सुना सकता है । कहनेवाला के भीतर जब सुननेवाले के अतिशय विश्वास होगा तभी ऐसी ऐसी स्थिति का निर्माण हो सकता है । विजया ने कथानायक से अपने जीवन के गोपनीय प्रसंग को विश्वास की स्थिति में ही प्रस्तुत किया था ।

13.4.2 ''और प्रेम सत्य तो सभी तत्वों में सविशेष और रहस्मय है । वायुस्थित सुगंध-की तरह अदृश्य ।'' प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ में संकलित 'झर गए फुलवा रह गई बास' शीर्षक काहनी से लिया गया है । इसके कहानीकार हैं रघुवीर चौधरी । यह गुजराती कहानी है जिसका हिंदी अनुवाद वीरेंद्र नारायण सिंह ने प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत अवतरण में प्रेम की अनुभवजन्य व्याख्या है । यह व्याख्या कथानायक ने प्रस्तुत की है । कथानायक कहता है कि प्रेम हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण सत्य है । दुनिया में जितना कुछ हमारे अस्तित्व को सार्थक बनाता है, उसमें प्रेम का स्थान महत्वपूर्ण एवं विशेष है । यह विशेष इसलिए है कि उसे न तो अनुभूतियों में पूर्णत: समेट । जा सकता है, न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है और न इसे तर्कों से समझा जा सकता है । यह अत्यंत रहस्यमय है । यह वायु में स्थित सुगंध की तरह स्थित ओर अदृश्य होता है । इसे कुछ सीमा तक अनुभव किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता है पर अपनी अदृश्यता में भी यह उतना महत्वपूर्ण है कि इसके बिना किसी के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती ।

13.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'झर गए फूल, रह गई बास' का सारांश लिखें ।

2. विजय और कथानायक का संक्षिप्त परिचय दें ।

3. कहानीकला की दृष्टि से प्रस्तुत कहानी की ('झर गए फूल, रह गई बास') समीक्षा संक्षेप में करें ।

4. आशय लिखें-''भाव की विमलता ही अच्छा की प्रमाण है ।

13.6 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग या घ) लिखें ।

1. 'मार गए फूल, रह गई बास' के कहानीकार हैं -

(क) वीरेंद्र नारायण सिंह (ख) रघुवीर चौधरी

(ग) रागकमल चौधरी (घ) रघुवीर सहाय

2. कथानायिका का नाम है-

(क) नीलिमा (ख) श्वेता

(ग) विजया (घ) आराधना

3. कथानायक के लिए निदेश से विजया क्या लाई थी ?

(क) मानसशास्त्र की पुस्तक (ख) सुंदर घड़ी

(ग) सुंदर अँगूठी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

यह भी कोई कहानी है । (सिंधी)

गाविंद माल्ही

(अनुवादक-मोतीलाल जोतवाणी)

14.1 उद्देश्य:

इस पाठ का उद्देश्य है छात्रों को सिंधी कहानी 'यह भी कोई कहानी है' से परिचित कराना और उन्हें इस योग्य बनाना कि वे इस कहानी की समीक्षा कहानी-कला के अनिवार्य तत्त्वों के आधार पर कर सकें ।

14.2 परिचय:

प्रस्तुत कहानी के कहानीकार गाविंद माल्वी हैं । यह सिंधी कहानी है । इस कहानी का अनुवाद हिंदी में मोतीलाल जोतवाणी ने किया है । गाविंद माल्वी सिंधी के प्रसिद्ध कथाकार हैं । प्रस्तुत कहानी का विषय प्रेम है ।

14.3 कहानी-कला की दृष्टि से यह भी कोई कहानी है' की समीक्षा

14.3. कथानक (सारांश)

एकदिन मोहन ने अपने मित्र को अपने घर चलने को और वहीं रात भर रहने को स्वीकार कर लिया ।

मोहन और कथानायक, दोनों बचपन के अच्छे दोस्त थे । मैट्रिक तक उन्होंने साथ-साथ पढ़ाई की दी । मैट्रिक करने के बाद कथानायक कराची के एक कालेज में पढ़ने लगा और मोहन मैट्रिक करने के बाद कुछ दिन बेकारी के दिन गुजार कर पी० डब्ल्यू० डी० में नौकरी कर ली । विभागीय परीक्षा देकर मोहन हेड-कलर्क के पद पर आसीन हो गया । उधर कथानायक साहित्य के क्षेत्र में यश अर्जित करने लगा । वह अच्छा कहानीकार हो गया । मोहन की शादी हो गई थी । उसके एक लड़की भी थी, उसका नाम रेखा था । वह पाँच-छह वर्ष की हो गई थी । कथानायक ने अभी शादी नहीं की थी ।

मोहन के घर आकर कथानायक को बहुत अच्छा लगा । मोहन की लड़की बड़ी सुंदर थी । वह तुरत अपने नए चाचा के साथ हिलमिल गई और उनसे कहानी सुनाने की जिद करने लगी ।

लड़की ने माँ से एक कहानी सीखी थी । वही कहानी वह अपने नए चाचा से सुनाने लगी-एक लड़का था, एक लड़की थी । दोनों एक साथ खेलते थे । लड़का दुलहा बनता था और लड़की दुलहिन । लड़का बड़ा हुआ और बहुत दूर पढ़ने चला गया । फिर उन दोनों ने भेंट नहीं हुई । लड़की आस लगाए बैठी रही पर उसकी आस पूरी नहीं हुई । इस पर कथानयक कहा- यह भी कोई कहानी हुई !

मोहन की पत्नी कथानायक के सामने घूँघट में ही आई और घूँघट में ही कथानायक का स्वागत किया वह कथानायक की कहानियाँ बहुत चाव से पढ़ती थी । मोहन ने कथानायक को बताया कि उसकी पत्नी कहती है कि मैं तुम्हारे मित्र से आइन्दे जब कभी वे आएँगे उनकी कहानियों पर कुछ प्रश्न भी करूँगी ।

लड़के का क्या हुआ ? रेखा द्वारा यह प्रश्न पूछे जाने पर मोहन की पत्नी ने जवाब कहा लड़का पहले बहुत दूध पीता था, अब बिलकुल नहीं पीता ।

मोहन की पत्नी ने कथानायक से दूध पीने का आग्रह किया था पर उसने यह कहकर मोहन की पत्नी का आग्रह टाल दिया कि मैं दूध नहीं पीता । कथानायक इस प्रसंग पर विचार करने लगे । उसे ऐसा लगा कि मोहन की पत्नी से उसकी जान-पहचान है । उसकी शंका धीरे-धीरे विश्वास में बदलने लगी । वह रात को मोहन के घर टिक नहीं सका । वह रात को ही बड़ौदा के लिए चल पड़ा ।

14.3.2. प्रस्तुत कहानी में तीन चार पात्र हैं मोहन, मोहन की पत्नी, बेटी रेखा और मोहन का बचपन का दोस्त कथानायक ।

यह कहानी घटनात्मक प्रवृत्ति की है । कहानी वर्णन और संवाद के आधार पर विकिसत होती है । पात्रों का मनोवैज्ञानिक विकास नहीं के बराबर होता है । संयोग इस काहनी को अर्थ देता है । 'संयोग' कथानायक और मोहन की पत्नी के जीवन की बिडंबना को सामने खाता है । कहानी अपने विकास में शिथिल है पर 'संयोग' के चलते अचानक उसकी दिशा में एक हलचल पैदा होती है । प्रेम एक चुप्पी में अपनी व्यथा-कथा कहने में समर्थ होता है । मोहन की पत्नी रेखा को लड़का लड़की का कथा सुनाना, कथानायक की कहानियाँ पढ़ना और कथानायक के सामने घूँघट में ही आना तथा कथानायक को अचानक रात में ही अनिवार्य काम का बहाना करके बड़ौदा चला जाना-कहानी में प्रेम के मूक अर्थ और उसकी वेदना को व्यक्त करता है । कहानीकार प्रेम की चुप्पी में प्रेम के दर्द को अभियक्त करने में सफल होता है ।

संवाद-योजा इस कहानी की संरचना का मजबूत पक्ष है । इसके द्वारा ही कहानी को एक निश्चित दिशा प्राप्त होती है ।

भाषा अत्यंत संयमित और पात्रनुकूल एवं भावानकूल हैं कहानी कला की दृष्टि से यह कहानी एक सार्थक और सफल कहानी है ।

14.4 व्याख्या

''स्त्री का सुख का मापदण्ड पुरुष के मापदण्ड से निराला होता है ।''

प्रस्तुत सारगर्भित वाक्य हमारी पाठ्यपुस्तक 'भारत की श्रेष्ठ कहानियाँ' में संकलित 'यह भी कोई कहानी है' शीर्षक कहानी से लिया गया है । कहानीकार हैं गोविंद माल्वी । प्रस्तुत कहानी सिंधी कहानी है जिसका हिंदी अनुवाद मोतीलाल जोतवाणी ने प्रस्तुत किया है ।

मोहन अपने बचपन के दोस्त (कथानायक को) को अपने घर आमंत्रित करता है । कथानायक को मोहन के घर रात को टिकना है । कथानायक मोहन के आमंत्रण को स्वीकार कर लेता है ।

मोहन की बेटी रेखा के साथ संवाद में कथानायक को यह पता चल जाता है कि मोहन की पत्नी उसके बचपन की दोस्त है जिसके साथ वह दुलहा-दुलहिन का खेल खेलता था । कथानयक रेखा के माध्यम से मोहन की पत्नी को सूचित करता है कि लड़की उस लड़के के साथ शादी करके बहुत दुखी होती । अब वह बहुत सुखी है ।

इस पर मोहन की पत्नी कहती है कि स्त्री के सुख के मापदण्ड से पुरूष परिचित नहीं हो पाता । पुरूष की दृष्टि में सुख का मापदण्ड कुछ और होता है और स्त्री की दृष्टि में कुछ और । स्त्री पति का संयोग ही सब कुछ मानती है । उसका ध्यान सुख-सुविधाओं पंर नहीं होता । इसके विपरीत पुरुष का ध्यान भौतिक सुख-सुविधा की ओर होता है । इस प्रकार पुरुष स्त्री की स्वाभाविक प्रवृत्ति से सर्वथा अपरिचित रहता है ।

14.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघु उत्तरीय

1. 'यह भी काई कहानी है' का सारांश प्रस्तुत करें ।

2. कथानायक का परिचय दें ।

3. मोहन की पत्नी का परिचय दें ।

4. कहानी के शीर्षक पर प्रकाश डालें ।

5. कहानी-कला की दृष्टि से प्रस्तुत कहानी (यह भी कोई कहानी है) की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करें ।

14.6 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का संकेताक्षर लिखें ।

1. मोहन की बेटी का नाम था

(क) रीता (ख) सुधा

(ग) राधा (घ) रेखा

2. 'यह भी कोई कहानी हैं' का कहानीकार है-

(क) गाविंद माल्वी (ख) गोविंद मिश्र

(ग) कमलेश्वर (घ) बलराज साहनी

3. कथानायक क्या है ?

(क) साहित्यकार (ख) किसी संस्था का मालिक

(ग) प्राचार्य (घ) वकील

4. मोहन क्या है ?

(क) समाजसेवक (ख) रोडस डिवीजन का हेड कलर्क

(ग) साहित्यकार (घ) व्यापारी

उत्तर 1 (घ) 2. (क) 3. (क) 4. (ख)